सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

9555-124-124 sanskritiiasedu@gmail.com

प्रिय विद्यार्थी,

सबसे पहले संस्कृति IAS के 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' का हिस्सा बनने पर आपको बहुत बधाई।

सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आई.ए.एस. परीक्षा के नाम से जाना जाता है; यह देश की प्रतिष्ठित लोक सेवाओं में चयन के लिये आयोजित होने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगी परीक्षा है। आज देश में युवाओं की एक बड़ी संख्या है जो सिविल सेवाओं में जाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहते हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक इस परीक्षा की तैयारी करना हर किसी के लिये संभव नहीं हो पाता। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये दिल्ली, प्रयागराज या लखनऊ जैसे शहरों में रहना किसी भी निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी के लिये संभवप्राय नहीं होता; दूसरा, एक बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की भी है जो पहले से नौकरी कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के लिये मुख्य समस्या समय की होती है क्योंकि कोचिंग संस्थान में जाकर तैयारी करने में डेढ़-दो वर्ष का समय लगता है, जबकि नौकरी से इतनी लंबी छुट्टी मिलनी प्राय संभव नहीं होती।

ऐसे ही विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति IAS ने 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कम फीस में विद्यार्थियों को किसी भी कोर्स की पूरी पाठ्य सामग्री उनके घर पर भेजी जाती है। यह पाठ्य सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। अगर कोई विद्यार्थी गंभीरता से इस पाठ्य सामग्री का अध्ययन करता है तो उसकी इतनी तैयारी निश्चित रूप से हो जाएगी कि वह सिविल सेवा परीक्षा को पास कर सके।

हालाँकि, किसी भी विद्यार्थी के दिमाग में यह संशय उत्पन्न होना स्वभाविक है कि अगर इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर यह परीक्षा पास हो सकती है तो फिर कोचिंग संस्थान में पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? अत: यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको सिर्फ संपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। क्लासरूम प्रोग्राम में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थी की तैयारी को प्रभावी बनाने के लिये कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जैसे नियमित कक्षा, क्लास टेस्ट, टेस्ट सीरीज़, शंका निवारण सत्र, नियमित रूप से अध्यापक से मिलकर तैयारी को बेहतर बनाने की सुविधा इत्यादि।

अत: 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' को क्लासरूम प्रोग्राम का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि, ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश दिल्ली या प्रयागराज जैसे शहरों में जाकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिये 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' अपनी प्रकृति में निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ विकल्प है।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक, उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © कॉपीराइट: संस्कृति पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	1-14
2	पाषाणकालीन संस्कृति या जीवनशैली	15-30
3	सिंधु घाटी सभ्यता	31-64
4	वैदिक काल	65-97
5	महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू.	98-113
6	प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन	114-148
7	मौर्य काल	149-178

❑❑❑❑❑

विस्तृत अनुक्रम

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**1-14**

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

- भूमिका
- प्रमुख ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण
  - ➤ पुरातात्त्विक स्रोत
    - ■ उत्खनन सामग्रियाँ
    - ■ अभिलेख
    - ■ स्मारक और भवन
    - ■ मुद्रा
    - ■ मूर्तियाँ
    - ■ चित्रकला
    - ■ मुहरें
    - ■ पुरातात्त्विक स्रोतों का महत्त्व
  - ➤ साहित्यिक स्रोत-
    - ■ ब्राह्मण साहित्य
      - ✓ वेद
      - ✓ वेदांग तथा सूत्र
      - ✓ महाकाव्य
      - ✓ पुराण
    - ■ ब्राह्मणेतर साहित्य-
      - ✓ बौद्ध साहित्य
      - ✓ जैन साहित्य
      - ✓ लौकिक साहित्य
    - ■ प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ
    - ■ साहित्यिक स्रोतों की सीमाएँ
  - ➤ विदेशी वृतांत
    - ■ ईरान, यूनान और रोम के लेखक
    - ■ चीनी यात्रियों के वृतांत
    - ■ अरब यात्रियों के वृतांत

2	**पाषाणकालीन संस्कृति या जीवनशैली**	**15-30**

- परिचय
- प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास
- प्रागैतिहासिक काल
- आद्य ऐतिहासिक काल
- ऐतिहासिक काल
- प्रागैतिहासिक काल : पाषाण काल
- पुरापाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ निम्न पुरापाषाण काल
  - ➤ मध्य पुरापाषाण काल
  - ➤ उच्च पुरापाषाण काल
- मध्यपाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ मध्यपाषाण काल : परिवर्तन एवं उद्विकास
  - ➤ मध्यपाषाणकालीन उपकरण
  - ➤ प्रमुख स्थल
- नवपाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ नवपाषाण काल : परिवर्तन एवं उद्विकास
  - ➤ नवपाषाणिक संस्कृति का भौगोलिक विस्तार
  - ➤ नवपाषाणकालीन उपकरण
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ
  - ➤ बनास/अहार संस्कृति, राजस्थान
  - ➤ कायथा संस्कृति, मध्य प्रदेश
  - ➤ मालवा संस्कृति, मध्य प्रदेश
  - ➤ जोरवे संस्कृति, महाराष्ट्र

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
3	**सिंधु घाटी सभ्यता**	**31-64**
	• परिचय • सिंधु सभ्यता की उत्पत्ति ➤ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत ➤ देशी उत्पत्ति का सिद्धांत • सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार • सिंधु सभ्यता के निर्माता • नगरीय नियोजन • महत्त्वपूर्ण नगर एवं संबंधित तथ्य • राजनीतिक जीवन • सामाजिक जीवन • आर्थिक जीवन ➤ कृषि एवं पशुपालन ➤ शिल्प तथा उद्योग धंधे ➤ व्यापार एवं वाणिज्य • धार्मिक जीवन • कला एवं स्थापत्य • सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	
4	**वैदिक काल**	**65-97**
	• भूमिका • आर्यों की उत्पत्ति • ऋग्वैदिक काल ➤ जानकारी के स्रोत ➤ भौगोलिक विस्तार ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ सामाजिक स्थिति ➤ आर्थिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति • उत्तर वैदिक काल ➤ जानकारी के स्रोत ➤ भौगोलिक विस्तार ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ सामाजिक स्थिति ➤ आर्थिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति • वैदिक साहित्य • वैदिकोत्तर साहित्य • वैदिक संस्कृति व सिंधु घाटी सभ्यता में अंतर • वैदिककालीन प्रमुख शब्दावलियाँ	
5	**महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू.**	**98-113**
	महाजनपद काल • प्रमुख स्रोत • महाजनपदों का उदय • बुद्ध के समकालीन गणतंत्र ➤ गणराज्यों की शासन पद्धति ➤ पतन के कारण • मगध साम्राज्य का उदय ➤ उदय के कारण ➤ मगध साम्राज्य के प्रमुख वंश • विदेशी आक्रमण ➤ ईरानी (हखामनी) आक्रमण ➤ यूनानी आक्रमण • द्वितीय नगरीकरण ➤ नगरीकरण के तत्त्व ➤ जानकारी के स्रोत ➤ उदय के कारण ➤ प्रथम एवं द्वितीय नगरीकरण में अंतर	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
6	**प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन**	**114-148**
	प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन • पृष्ठभूमि • नवीन धर्मों के उदय के कारण • धार्मिक आंदोलन का स्वरूप • प्रमुख भौतिकवादी चिंतक एवं उनसे संबंधित संप्रदाय • विभिन्न धर्मों का उदय **बौद्ध धर्म** • गौतम बुद्ध • बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ • बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत • बौद्ध संघ एवं उसकी कार्यप्रणाली • बौद्ध संगीतियाँ • बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय • बौद्ध साहित्य • बौद्ध धर्म का प्रसार • बुद्ध का सामाजिक-राजनीतिक चिंतन • बौद्ध धर्म का मूल्यांकन • बौद्ध धर्म के पतन के कारण • बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव **जैन धर्म** • परिचय • जैन धर्म की शिक्षाएँ • जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांत • जैन संगीतियाँ • प्रसिद्ध जैन मंदिर • जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय • जैन साहित्य • जैन धर्म का समाज पर प्रभाव • जैन धर्म का मूल्यांकन • जैन धर्म के पतन के कारण • बौद्ध एवं जैन धर्म में समानता तथा असमानता • वैष्णव धर्म • शैव धर्म • शाक्त धर्म	
7	**मौर्य काल**	**148-178**
	• परिचय • जानकारी के स्रोत • राजनीतिक स्थिति ➤ चंद्रगुप्त मौर्य ➤ बिंदुसार ➤ अशोक ➤ अशोक के उत्तराधिकारी • प्रशासनिक स्थिति ➤ केंद्रीय प्रशासन ➤ प्रांतीय प्रशासन ➤ नगरीय प्रशासन ➤ ग्राम प्रशासन ➤ न्यायिक प्रशासन ➤ गुप्तचर प्रशासन ➤ राजस्व प्रशासन ➤ सैन्य प्रशासन • आर्थिक स्थिति • सामाजिक स्थिति • कला एवं संस्कृति ➤ स्थापत्य कला ➤ मूर्तिकला ➤ शिक्षा, भाषा एवं साहित्य	

❑❑❑❑❑

इकाई

01

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Sources of Ancient Indian History)

- भूमिका
- प्रमुख ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण
  - ➤ पुरातात्त्विक स्रोत
    - ■ उत्खनन सामग्रियाँ
    - ■ अभिलेख
    - ■ स्मारक और भवन
    - ■ मुद्रा
    - ■ मूर्तियाँ
    - ■ चित्रकला
    - ■ मुहरें
    - ■ पुरातात्त्विक स्रोतों का महत्त्व
  - ➤ साहित्यिक स्रोत
    - ■ ब्राह्मण साहित्य
      - ✓ वेद
      - ✓ वेदांग तथा सूत्र
      - ✓ महाकाव्य
      - ✓ पुराण
    - ■ ब्राह्मणेत्तर साहित्य
      - ✓ बौद्ध साहित्य
      - ✓ जैन साहित्य
      - ✓ लौकिक साहित्य
    - ■ प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ
    - ■ साहित्यिक स्रोतों की सीमाएँ
  - ➤ विदेशी वृतांत
    - ■ ईरान, यूनान और रोम के लेखक
    - ■ चीनी यात्रियों के वृतांत
    - ■ अरब यात्रियों के वृतांत

भूमिका (Background)

अतीत में घटित घटनाओं के क्रमबद्ध अध्ययन को इतिहास कहते हैं। इससे मानव इतिहास के उन पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है जिनसे होकर मनुष्य वर्तमान दौर तक पहुँचा है। कुछ लोगों का मानना है कि इतिहास युद्ध और शासकों की कहानियों तक सीमित है, किंतु यह सत्य नहीं है क्योंकि इसका विषय क्षेत्र काफी विस्तृत है। इतिहास की विभिन्न घटनाओं को समझने के लिये अलग-अलग दृष्टिकोणों का अनुसरण किया जाता है। भारत में हेरोडोटस या लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए। ऐसे में, कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने मत व्यक्त किया कि भारतीयों में इतिहास की समझ और ऐतिहासिक ज्ञान का अभाव था। परंतु सच तो यह है कि प्राचीन भारतीय इतिहास की धारणा आधुनिक इतिहासकारों की इतिहास लेखन की धारणा से पूर्णत: अलग थी।

- इतिहास की जानकारी प्राप्त करने का मुख्य स्रोत अतीत के तथ्य होते हैं, अत: इतिहासकार साक्ष्यों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करते हैं।
- ऐतिहासिक स्रोत विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे– साहित्यिक, पुरातात्त्विक आदि। इन्हीं ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इतिहासकार तत्कालीन संस्कृतियों, संस्थाओं, परंपराओं आदि का वर्णन करते हैं।
- इतिहास का वह कालखंड जिसके बारे में कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं।
- इतिहास का वह कालखंड जिससे संबंधित लिखित साक्ष्य उपलब्ध तो है किंतु उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है, उसे 'आद्य ऐतिहासिक काल' कहते हैं, जैसे– सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक संस्कृति।
- वह कालखंड जिसकी लिपि भी प्राप्त हो चुकी है और उसका वाचन भी किया जा चुका है 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है। भारतीय 'ऐतिहासिक काल' 600 ई.पू. से प्रारंभ होता है, क्योंकि इस समय से हमें इतिहास की जानकारी के ऐसे लिखित साक्ष्य प्राप्त होते हैं जिन्हें पढ़ा जाना संभव है, जैसे– अशोक के अभिलेख तथा अन्य साहित्यिक स्रोत आदि।

बौद्ध साहित्य (Bauddhist Literature)

- भारतीय साहित्य में बौद्ध साहित्य का भी विशेष महत्त्व है। बौद्ध ग्रंथों में 'त्रिपिटक' सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। वस्तुतः 'त्रिपिटक' बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन है। इनकी कुल संख्या 3 है– सुत्तपिटक, विनयपिटक तथा अभिधम्मपिटक।
- विनयपिटक संघ संबंधी नियम तथा आचार संहिता का, सुत्तपिटक धार्मिक सिद्धांत तथा धर्मोपदेश का जबकि अभिधम्मपिटक दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।
- बौद्ध ग्रंथ, पालि भाषा में लिखे गए हैं। इन ग्रंथों से संबंधित जातकों में बुद्ध के जीवन संबंधी घटनाओं का वर्णन है। पालि भाषा में लिखित 'दीपवंश' तथा 'महावंश' नामक दो बौद्ध ग्रंथों से मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है। नागसेन द्वारा रचित मिलिंदपन्हो पालि भाषा में रचित महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, इसमें हिंद-यवन शासक मिनांडर के विषय में सूचना मिलती है। बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय का प्रमुख ग्रंथ 'कथावस्तु' है जिसमें महात्मा बुद्ध का जीवन चरित् अनेक कथानकों के साथ वर्णित है। महायान संप्रदाय के ग्रंथ 'ललितविस्तर', 'दिव्यावदान' आदि हैं।
- ललितविस्तर में बुद्ध को देवता मानकर उनके जीवन तथा कार्यों का चमत्कारिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। दिव्यावदान से अशोक के उत्तराधिकारियों से लेकर पुष्यमित्र शुंग तक के शासकों की जानकारी मिलती है।

जैन साहित्य (Jain Literature)

जैन साहित्यों को 'आगम' कहा जाता है। जैन ग्रंथों में परिशिष्टपर्वन्, भद्रबाहुचरित्, आचारांगसूत्र, भगवतीसूत्र तथा कालिका पुराण आदि प्रमुख हैं। जैन धर्म का प्रारंभिक इतिहास 'कल्पसूत्र' से ज्ञात होता है जिसकी रचना भद्रबाहु ने की थी।

लौकिक साहित्य (Non-Canonical Literature)

- लौकिक साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक, साहित्यिक व जीवन वृतांतो का उल्लेख किया जाता है। ऐतिहासिक रचनाओं में 'अर्थशास्त्र' का विशेष महत्त्व है, जिसकी रचना कौटिल्य ने की थी। इस पुस्तक में चंद्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।
- कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' भी विशेष उल्लेखनीय है। संस्कृत में रचित इस ग्रंथ में ऐतिहासिक घटनाओं को पहली बार क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसमें आदिकाल से लेकर 1151 ई. तक के कश्मीर के इतिहास का क्रमिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। साहित्यिक रचनाओं में पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्यायन की वर्तिका, पतंजलि का महाभाष्य, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, कालिदास की मालविकाग्निमित्रम् आदि उल्लेखनीय हैं।
- ऐतिहासिक जीवन वृत्तातों में अश्वघोष कृत बुद्धचरित्, बाणभट्ट का हर्षचरित्, वाक्पति का गौडवहो, विल्हण का विक्रमांकदेवचरित्, संध्याकर नंदी का रामचरित्, हेमचंद्र का कुमारपालचरित्, जयानक का पृथ्वीराज विजय आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ (Important Literary Creations)

रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
अष्टाध्यायी	पाणिनी	व्याकरण ग्रंथ
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल के बारे में जानकारी
महाभाष्य (अष्टाध्यायी पर टीका)	पतंजलि	पुष्यमित्र शुंग के विषय में जानकारी
कथासरित्सागर	सोमदेव	मौर्य काल के विषय में जानकारी

वृहत्कथामंजरी	क्षेमेंद्र	मौर्य काल के विषय में जानकारी
अर्थशास्त्र (विषय-राजनीति)	कौटिल्य	मौर्य काल के बारे में जानकारी
नीतिसार	कामंदक	गुप्तकालीन राजतंत्र पर प्रकाश
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंगवंश के बारे में जानकारी
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
हर्षचरित्	बाणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन
रामचरित्	संध्याकर नंदी	बंगाल के शासक रामपाल की जीवनी
पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंशों की क्रमबद्ध जानकारी

साहित्यिक स्रोतों की सीमाएँ (Limitations of Literary Sources)

प्राचीन भारतीय साहित्यिक स्रोत इतिहासलेखन में बहुत उपयोगी प्रतीत नहीं होते हैं, किंतु इनसे तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। साहित्यिक स्रोतों की तीन सीमाएँ हैं–

- प्रथम, इन ग्रंथों की रचना की तिथि निश्चित नहीं है। दूसरे, किसी भी ग्रंथ से प्राय: उसी प्रदेश की जानकारी मिलती है जहाँ उसकी रचना हुई थी और तीसरे, इन ग्रंथो की प्रतियाँ लिखने वाले विद्वानों ने बहुधा अपनी इच्छानुसार उनके पाठ में हेर-फेर कर दिया जिससे यह ज्ञात नहीं होता कि मूल पाठ क्या था। इतिहासकारों को साहित्यिक कृतियों का प्रयोग करते समय गंभीर कठिनायों का सामना करना पड़ता है। अधिकांश ग्रंथों, चाहे वे ब्राह्मण ग्रंथ हों या बौद्ध हों या जैन साहित्य, सभी में स्तरीकरण की समस्या है।

विदेशी वृतांत (Foreign Accounts)

रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
इंडिका	मेगस्थनीज (यूनान)	चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस का राजदूत, मौर्यकालीन समाज एवं संस्कृति का विवरण

इकाई

02

पाषाणकालीन संस्कृति या जीवन शैली
(Stone Age Culture or Lifestyle)

- परिचय
- प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास
- प्रागैतिहासिक काल
- आद्य ऐतिहासिक काल
- ऐतिहासिक काल
- प्रागैतिहासिक काल : पाषाण काल
- पुरापाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ निम्न पुरापाषाण काल
  - ➤ मध्य पुरापाषाण काल
  - ➤ उच्च पुरापाषाण काल
- मध्यपाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ मध्यपाषाण काल : परिवर्तन एवं उद्विकास
  - ➤ मध्यपाषाणकालीन उपकरण
  - ➤ प्रमुख स्थल
- नवपाषाण काल : जीवन शैली
  - ➤ नवपाषाण काल : परिवर्तन एवं उद्विकास
  - ➤ नवपाषाणिक संस्कृति का भौगोलिक विस्तार
  - ➤ नवपाषाणकालीन उपकरण
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ
  - ➤ बनास/अहार संस्कृति, राजस्थान
  - ➤ कायथा संस्कृति, मध्य प्रदेश
  - ➤ मालवा संस्कृति, मध्य प्रदेश
  - ➤ जोरवे संस्कृति, महाराष्ट्र

परिचय (Introduction)

- हिस्ट्री (History) शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' (Historia) से मानी जाती है, इसका अर्थ होता है– 'जानना अथवा ज्ञात होना'। यूनानी भाषा में इतिहासकार को 'हिस्टोर' कहा जाता है। इतिहास तीन शब्दों 'इति-ह-आस' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है– 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ' होगा।
- पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व एवं विकासक्रम को जानने के लिये इतिहास को समझना आवश्यक है। दरअसल, इतिहास वर्तमान के प्रकाश में अतीत का किया गया अध्ययन है जो कि समस्त मानव जाति द्वारा की गई उन्नति का विवरण प्रस्तुत करता है।
- इतिहास के लिये 'हिस्ट्री' (History) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग हेरोडोटस ने किया था जो यूनान का निवासी था। हेरोडोटस को 'इतिहास का जनक' माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गए इतिहास को 'कथात्मक इतिहास' कहा जाता है।
- निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर इतिहास के महत्त्व एवं इसकी जानकारी से होने वाले लाभों को समझा जा सकता है :
  - ➤ मानव जाति का अभ्युदय एवं विकास
  - ➤ प्राचीन संस्कृतियों की जानकारी
  - ➤ विभिन्न भाषाओं एवं लिपियों की जानकारी
  - ➤ विभिन्न धर्मों की जानकारी
  - ➤ लोककला एवं वास्तुकला की जानकारी

ऐतिहासिक काल (Historic Period)

- यह ऐसा कालखंड है जिसकी जानकारी के लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और वे पठनीय भी हैं।
- इस काल में मानव, बर्बर से सभ्य बन गया था।
- पुरातात्त्विक, साहित्यिक एवं विदेशियों के विवरण इस काल के प्रमुख स्रोत हैं।
- भारत में इस काल के अंतर्गत छठी शताब्दी ई.पू. तथा उसके पश्चात् की अवधि को रखा जाता है।

प्रागैतिहासिक काल : पाषाण काल (Prehistoric Period: Stone Age)

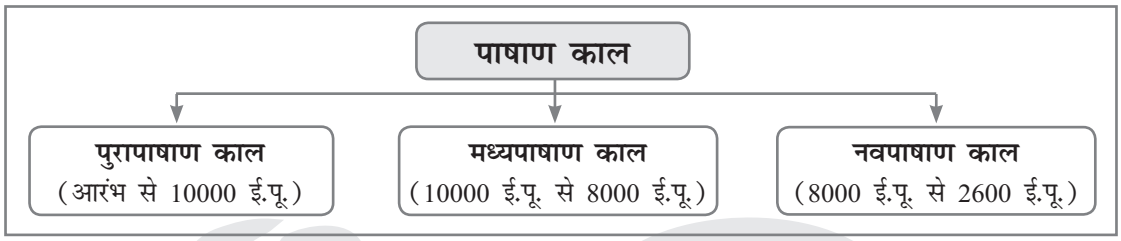

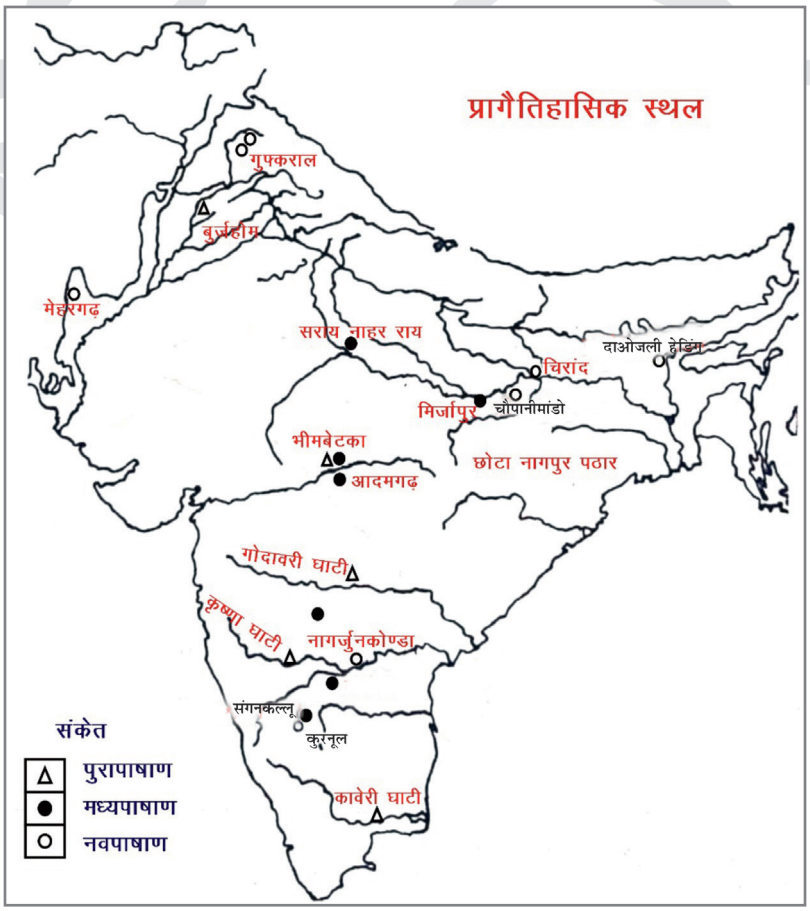

मध्य पुरापाषाण काल	फलक प्रकार के उपकरण	फलक, वेधनी, खुरचनी आदि	नेवासा (महाराष्ट्र), कृष्णा घाटी (कर्नाटक), बेतवा एवं सोन घाटी (म.प्र.), बेलन घाटी (उ.प्र.) इत्यादि।
उच्च पुरापाषाण काल	ब्लेड प्रकार के उपकरण	तक्षणी, खुरचनी आदि	लोहंदा नाला (बेलन घाटी, उत्तर प्रदेश), सोन घाटी एवं भीमबेटका (म.प्र.), सिंहभूमि (वर्तमान झारखंड) इत्यादि।

पुरापाषाणकालीन उपकरण (Paleolethic Tools)

चीरने के औज़ार (Cleaver)	• इनमें दोहरी धार होती थी। • इनका उपयोग पेड़ काटने और चीरने के लिये होता था।	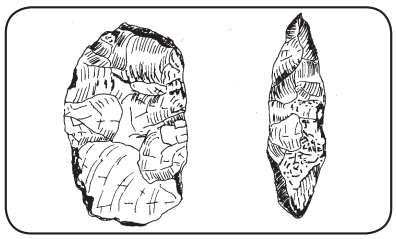
काटने के औज़ार (Chopper)	• यह एक बड़ा औज़ार होता था, जिसमें एक-तरफा धार होती थी। • इसका उपयोग काटने के लिये किया जाता है।	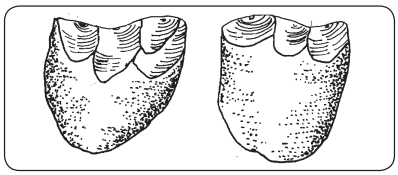
काटने के औज़ार (Chopping Tool)	• यह चौपर के समान एक बड़ा औज़ार था, परंतु इसमें दोहरी धार होती थी। • इसमें कई पट्टे होते थे।	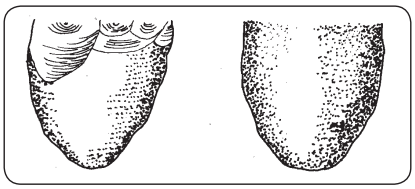
खुरचनी (Scraper)	• इसका किनारा धारदार होता था। • इसका उपयोग पेड़ की छाल या जानवरों की खाल उतारने में किया जाता होगा।	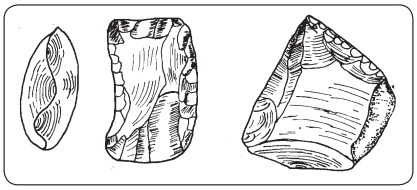
तक्षणी (Burin)	• यह ब्लेड के समान हुआ करती थी। • संभवत: इसका उपयोग मुलायम पत्थरों, हड्डियों, क्रोडों या गुफाओं की दीवारों पर नक्काशी के लिये किया जाता था।	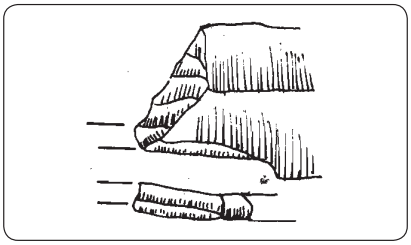

- इसी काल में परिवार, समाज और सामाजिक संबंधों की संकल्पना का भी विकास हुआ। जनसंख्या में वृद्धि हुई तथा आखेट की सुगमता बढ़ने के कारण लोग छोटी-छोटी टोलियों में रहने लगे, इससे स्थाई निवास की परंपरा प्रारंभ हुई।
- सर्वप्रथम इसी युग में बाँस, बल्ली, घास आदि की सहायता से घरों एवं झोपड़ियों का निर्माण हुआ। घरों के अवशेष चोपानी मांडो (इलाहाबाद) एवं बागोर (राजस्थान) से जबकि झोपड़ियों के अवशेष सरायनाहर राय एवं महादहा से मिले हैं।
- मध्यपाषाण काल में अन्नागार के साक्ष्य चोपानी मांडो (बेलनघाटी) व दमदमा (उ.प्र.) से प्राप्त हुए हैं लेकिन ये साक्ष्य मानव को कृषि उत्पादक के रूप में नहीं, बल्कि खाद्य संग्राहक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- इस काल में हस्त निर्मित मृद्भाँडों का निर्माण भी प्रारंभ हुआ। चोपानी मांडो से लगभग 8000 ई.पू. के हस्त निर्मित मृदभाँड प्राप्त हुए हैं।

प्रमुख स्थल (Important Sites)

- इस काल में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मध्य प्रदेश के आदमगढ़ एवं राजस्थान के बागोर से प्राप्त हुए हैं।
- राजस्थान स्थित सांभर झील के निक्षेपों के अध्ययन से वृक्षारोपण की जानकारी मिलती है।
- मानव अस्थिपंजर के अवशेष उत्तर प्रदेश के सरायनाहर राय तथा महादहा नामक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- दमदमा (उत्तर प्रदेश) से सिलबट्टा एवं अन्नागार के साक्ष्य मिले हैं।
- अन्य स्थल– टेरीसमूह (तमिलनाडु), बीरभानपुर (प. बंगाल), लंघनाज (गुजरात) इत्यादि हैं।

मध्यपाषाणकालीन उपकरण (Mesolithic Tools)

इस काल के उपकरण छोटे-छोटे पत्थरों से निर्मित थे। इनके सूक्ष्म आकार के कारण इन्हें 'सूक्ष्मपाषाण उपकरण' (Microlithic Tools) कहते हैं। इनकी लंबाई 1 से 8 सेंटीमीटर के मध्य मापी गई है। इस काल में तक्षणी, वेधनी, खुरचनी इत्यादि के साक्ष्य भी मिलते हैं। इस प्रकार, उपकरण निर्माण के संदर्भ में यह काल पुरानी प्रवृत्तियों की निरंतरता एवं नवीन प्रवृत्तियों के निर्माण का युग प्रतीत होता है। इस काल के प्रमुख उपकरण निम्नलिखित हैं–

औज़ार	संबंधित तथ्य	चित्र
ब्लेड (Blade)	• इसकी लंबाई इसकी चौड़ाई से दोगुनी होती थी। • संभवत: इसका उपयोग काटने के लिये किया जाता होगा।	
त्रिकोण (Triangle)	• इसमें एक सिरा तथा एक आधार होता था। इसके सिरे को धारदार बनाया जाता था। • मुख्यत: इसका उपयोग काटने के लिये किया जाता होगा और इसे तीर के अग्रभाग में भी लगाया जाता होगा।	
नुकीला औज़ार (Point Tool)	• इसमें एक सिरा और एक आधार होता था। इसके दोनों सिरे ढलवाँ तथा धारदार होते थे।	

इकाई

03

सिंधु घाटी सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

- परिचय
- सिंधु सभ्यता की उत्पत्ति
  - ➤ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत
  - ➤ देशी उत्पत्ति का सिद्धांत
- सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार
- सिंधु सभ्यता के निर्माता
- नगरीय नियोजन
- महत्त्वपूर्ण नगर एवं संबंधित तथ्य
- राजनीतिक जीवन
- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन
  - ➤ कृषि एवं पशुपालन
  - ➤ शिल्प तथा उद्योग धंधे
  - ➤ व्यापार एवं वाणिज्य
- धार्मिक जीवन
- कला एवं स्थापत्य
- सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

परिचय (Introduction)

- 20वीं सदी के दूसरे दशक तक माना जाता था कि वैदिक (आर्य) सभ्यता ही भारत की प्राचीनतम सभ्यता है किंतु, 1921 ई. में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा (पाकिस्तान के पंजाब प्रांत) में उत्खनन के पश्चात् एक ऐसी सभ्यता के बारे में पता चला जो वैदिक सभ्यता से ज़्यादा विकसित, समृद्ध और प्राचीन थी।
- प्रारंभिक उत्खननों से सिंधु सभ्यता के पुरास्थल केवल हड़प्पा व उसके आसपास के क्षेत्र में ही मिले थे जिससे इसका नामकरण हड़प्पा सभ्यता किया गया था। कालांतर में जब हड़प्पा से इतर भौगोलिक क्षेत्रों में भी अन्य पुरास्थलों की खोज हुई तो इसके बहुतायत स्थल सिंधु-नदी घाटी के क्षेत्रों में भी मिले जिसके आधार पर इस सभ्यता को 'सिंधु घाटी' सभ्यता कहा गया।
- उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हड़प्पा/सिंधु सभ्यता का उदय ताम्रपाषाण काल के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। इस सभ्यता के स्थल वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों तक विस्तृत हैं। सिंधु घाटी सभ्यता सर्वाधिक विकसित, विस्तृत तथा समृद्ध अवस्था में थी।
- सिंधु सभ्यता के काल निर्धारण हेतु कई साक्ष्यों, यथा– मुहरें; (वे वस्तुएँ, जिनका उपयोग समकालीन सभ्यताओं के साथ व्यापार में किया जाता था) आदि समकालीन सभ्यताओं के अभिलेखों की सहायता ली गई है। इनके अतिरिक्त, काल निर्धारण की वैज्ञानिक विधियों, यथा– रेडियो कार्बन-14 तिथि निर्धारण विधि तथा साथ ही वृक्ष-विज्ञान (dendrology) तथा पुरावनस्पति विज्ञान की अन्वेषण विधियों का भी उपयोग किया गया। इस प्रकार, हड़प्पा सभ्यता का काल 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है। 2200 - 2000 ई.पू. के मध्य यह सभ्यता अपनी परिपक्व अवस्था में थी। हालाँकि, नवीन शोध एवं अध्ययन के अनुसार, यह सभ्यता लगभग 8000 साल पुरानी है।

- सिंधु घाटी सभ्यता का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग कि.मी. था, जो उत्तर से दक्षिण में 1100 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम में 1600 कि.मी. तक त्रिभुजाकार रूप में फैला हुआ है। अब तक लगभग 2800 से अधिक पुरास्थलों की खोज हो चुकी है, इनमें से दो-तिहाई पुरास्थल भारतीय क्षेत्र में मिले हैं।
- यह सभ्यता अपनी समकालीन मेसोपोटामिया तथा मिस्र की सभ्यताओं के विस्तार क्षेत्र से भी अधिक विस्तृत थी। इस प्रकार, सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप के पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा उत्तर-पूर्वी महाराष्ट्र तक फैली थी।

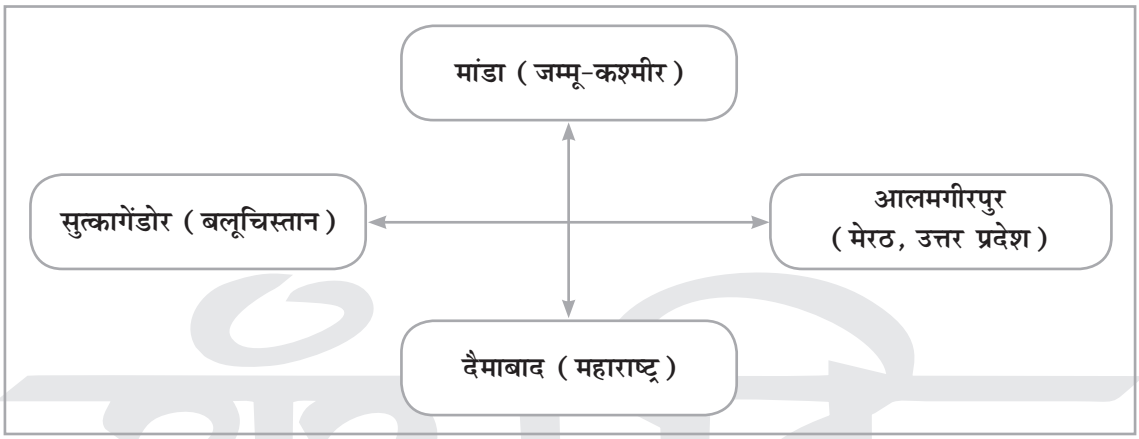

वर्तमान काल में निम्नलिखित स्थानों तक सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार देखा जा सकता है

प्रांत	प्रमुख स्थल
सिंध प्रांत	मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, कोटदीजी, आमरी
पंजाब (पाकिस्तान)	हड़प्पा, डेरा इस्माइल खान, रहमान ढेरी, सरायखोला, जलीलपुर तथा गनेरीवाला
पंजाब (भारत)	रोपड़, कोटला निहंग, संघोल तथा बारा
बलूचिस्तान	सुत्कागेंडोर, बालाकोट, सुत्काकोह, मेहरगढ़, राणाघुंडई, कुल्ली तथा डाबरकोट
हरियाणा	बनावली, राखीगढ़ी, मिताथल तथा कुणाल
गुजरात (कच्छ)	देसलपुर, सुरकोटदा, धौलावीरा तथा दंबसादत
गुजरात (काठियावाड़)	लोथल, रंगपुर, रोजदी, भगतराव तथा मालवन
राजस्थान	कालीबंगा
महाराष्ट्र	दैमाबाद
उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर, बड़गाँव तथा हुलास
उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत	गुमला

क्र.सं.	स्थान	भौगोलिक स्थिति	खोजकर्ता/वर्ष	साक्ष्य
1	हड़प्पा	रावी नदी, मोंटगोमरी (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी (1921)	पाषाण निर्मित नर्तक की मूर्ति, श्रमिक निवास, एक मूर्ति; जिसमें स्त्री के गर्भ से पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है, सोलह भट्टियाँ, धोती पहने व्यक्ति की मूर्ति, अन्नागार, कब्रिस्तान R-37, शंख का बना बैल, स्वास्तिक (शुभ-लाभ), काँसे का इक्का व दर्पण, मंजूषा तथा बर्तन पर मछुआरे का चित्र इत्यादि।
2	मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी, लरकाना (पाकिस्तान)	राखलदास बनर्जी (1922)	स्नानागार, अन्नागार, सभा भवन, काँसे से निर्मित नर्तकी की मूर्ति, कुम्हार के 6 भट्टे, सूती कपड़ा, शतरंज की गोटियाँ, दाढ़ी वाला व्यक्ति, हाथी का कपाल खंड, पशुपति शिव के अंकन वाली मुहर।
3	सुत्कागेंडोर	दाश्क नदी, बलूचिस्तान (पाकिस्तान)	ओरलस्टाइन (1927) व जॉर्ज डेल्स (1962)	नदी की तटीय व्यापारिक चौकी, राख से भरा बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी से बनी चूड़ियाँ।
4	आमरी	सिंधु नदी, सिंध (पाकिस्तान)	एन.जी. मजूमदार (1929), जॉर्ज एफ. डेल्स (1963/79)	बारहसिंगा के साक्ष्य।
5	चन्हूदड़ो	सिंधु नदी, सिंध (पाकिस्तान)	एन.जी. मजूमदार (1934)	मुहर निर्माण केंद्र, मिट्टी की बनी बैलगाड़ी का प्रतिरूप, काँसे की खिलौना गाड़ी, दवात तथा मनके बनाने का कारखाना।
6	कालीबंगा	घग्गर नदी, राजस्थान (भारत)	अमलानंद घोष (1951-52) बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961)	हल द्वारा जुते हुए खेत, बेलनाकार मुहर, पकी मिट्टी का हल, सबसे पहले भूकंप का साक्ष्य, अग्निकुंड, ऊँट की हड्डियाँ, कच्ची व अलंकृत ईंटें।
7	कोटदीजी	सिंधु नदी, सिंध (पाकिस्तान)	फज़ल अहमद (1955-57)	चित्रित मृदभाँड, सफेद तथा रंगीन चूड़ियाँ, पत्थर के बाणाग्र, तिकोने ठीकरे, मातृदेवी, पत्थर की चाबी, मनके, तथा सेलखड़ी से बनी मुहरें।

इकाई

4

वैदिक काल
(Vedic Period)

- भूमिका
- आर्यों की उत्पत्ति
- ऋग्वैदिक काल
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ भौगोलिक विस्तार
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
- उत्तर वैदिक काल
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ भौगोलिक विस्तार
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
- वैदिक साहित्य
- वैदिकोत्तर साहित्य
- वैदिक संस्कृति व सिंधु घाटी सभ्यता में अंतर
- वैदिककालीन प्रमुख शब्दावलियाँ

भूमिका (Background)

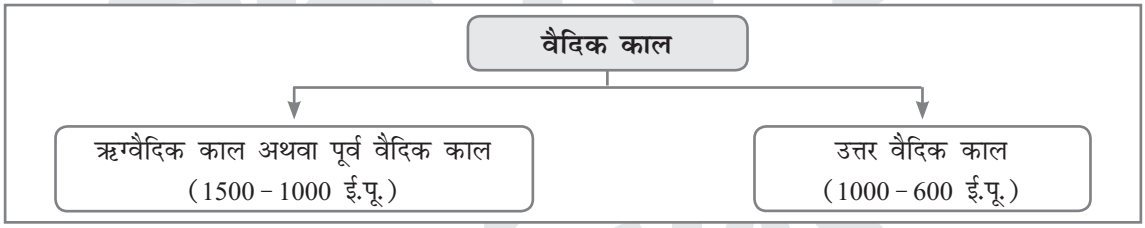

- सिंधु सभ्यता के पतन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न संस्कृतियों का क्रमिक विकास हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि इसी दौरान भारत में आर्यों का आगमन हुआ और इन्होंने सैंधव प्रदेश में आर्य संस्कृति की नींव रखी जिसकी जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। इसलिये विद्वानों ने इसे 'वैदिक संस्कृति' का नाम दिया।
- आर्य सभ्यता का इतिहास जानने के लिये पुरातात्त्विक स्रोतों का तो अभाव है, लेकिन साहित्यिक स्रोत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों में वैदिक साहित्य प्रमुख हैं। वैदिक संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति थी। ऐसा माना जाता है कि इसी कालखंड में वेदों की रचना हुई थी।
- वैदिक शब्द की उत्पत्ति 'वेद' शब्द व 'विद्' धातु से हुई है। वेद का अर्थ 'ज्ञान' है। यह मूलरूप से दैवीय प्रेरणा पर आधारित अनुभवों का संकलन है। जिसकी जानकारी हमें वैदिक ग्रंथों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) से मिलती है। इनमें से सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' है।
- 'आर्य' शब्द संस्कृत भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है– श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन तथा उत्कृष्ट। यह अनुमान लगाना कठिन है कि आर्य एक ही नस्ल के थे या नहीं और उनकी आरंभिक संस्कृति एक जैसी थी या नहीं।
- इस काल के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन तथा अन्य तत्त्वों में विभिन्न परिवर्तन परिलक्षित होने लगे थे। ध्यातव्य है की पूर्व वैदिक काल में मानव जीवन के जो विभिन्न तत्त्व विकसित हुए थे, उत्तर वैदिक काल में उनमें परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

आर्यों की उत्पत्ति (Origin of the Aryans)

- ईरान की पवित्र पुस्तक जेंद अवेस्ता व बोगज़कोई अभिलेख से स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि आर्य ईरान के रास्ते से भारत आए थे। सर्वप्रथम, मैक्समूलर ने वर्ष 1853 में 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया। आर्यों के मूल निवास के संदर्भ में विद्वानों के बीच गहरा मतभेद है। जिनमें से कुछ विद्वानों का मानना है कि आर्य मूलत: भारत के निवासी थे एवं वे भारत से विश्व के अन्य हिस्सों में गए जबकि अन्य विद्वान आर्यों की उत्पत्ति विश्व के विभिन्न हिस्सों से हुई मानते हैं। इस संदर्भ में विद्वानों के मत निम्नलिखित हैं–

विद्वान	आर्यों का उत्पत्ति स्थल
मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
डॉ. अविनाश चंद्र दास	सप्त सैंधव प्रदेश
दयानंद सरस्वती	तिब्बत
नेहरिंग एवं प्रो० गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
पी. गाइल्स	हंगरी अथवा डेन्यूब नदी घाटी
प्रो. पेंका	जर्मनी के मैदानी भाग

- वैदिक संस्कृति को इसकी विशेषताओं की दृष्टि से इतिहासकारों ने दो भागों में विभाजित किया है–
  - ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)
  - उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल, 1500-1000 ई.पू. (Regvedic Period, 1500-1000 BC)

जानकारी के स्रोत (Sources of Information)

भारत में आर्यों के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी प्राप्त करने का मुख्य स्रोत ऋग्वेद है। ऋग्वेद के अतिरिक्त, वैदिक युग के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु कुछ पुरातात्त्विक स्रोत भी उपलब्ध हैं। लेकिन ये पुरातात्त्विक स्रोत अपनी कतिपय त्रुटियों के कारण निर्विवाद नहीं हैं, किंतु इन पुरातात्त्विक स्रोतों का प्रयोग साहित्यिक स्रोतों के आधार पर किये गए विश्लेषण की पुष्टि करने हेतु किया जाता है। ऋग्वैदिक काल के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साहित्यिक व पुरातात्त्विक स्रोत इस प्रकार हैं–

साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

- 'ऋग्वेद संहिता' ऋग्वैदिक काल की एक प्रमुख रचना है। इसमें 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसका रचनाकाल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य माना जाता है।

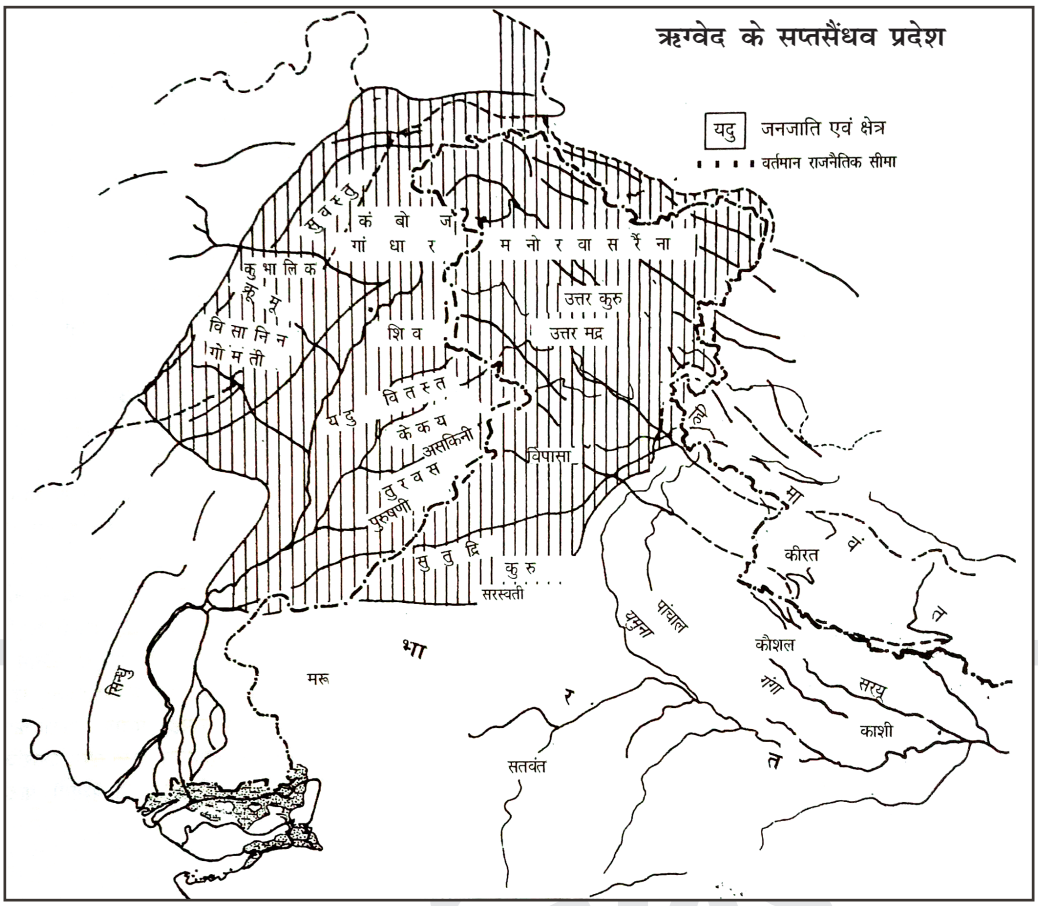

प्रदेश	विस्तार क्षेत्र
आर्यावर्त	बिहार व बंगाल सहित समस्त उत्तर भारत
मध्य देश	हिमालय व विंध्य पर्वत का क्षेत्र
ब्रह्मर्षि देश	गंगा-यमुना के दोआब के आसपास का क्षेत्र
ब्रह्मावर्त	सतलज नदी से यमुना नदी के बीच का क्षेत्र
सप्त सैंधव प्रदेश	सात नदियों– सिंधु, सरस्वती (सरसूती), शतुद्रि (सतलज), विपासा (व्यास), परुष्णी (रावी), वितस्ता (झेलम) तथा अस्किनी (चिनाब) का क्षेत्र

राजनीतिक स्थिति (Political Condition)

- ऋग्वैदिक कालीन शासन प्रणाली कबीलाई व्यवस्था पर आधारित थी। कबीले को 'जन' तथा इसके प्रधान को 'राजन्' अथवा 'जनस्यगोप' कहा जाता था। इस काल में जनसाधारण से मिलकर बनी 'समिति' नामक संस्था के माध्यम से राजा के निर्वाचन के संकेत प्राप्त होते हैं। आरंभ में 'समिति' द्वारा राजा का निर्वाचन होता था, लेकिन बाद में यह पद वंशानुगत हो गया।

- ऋग्वैदिक आर्य लोहे से परिचित नहीं थे। कताई-बुनाई का कार्य स्त्री एवं पुरुष दोनों करते थे। सूत, रेशम तथा ऊन से वस्त्र बनाए जाते थे। इस काल में सिंध एवं गांधार प्रदेश सुंदर ऊनी वस्त्रों के लिये प्रसिद्ध थे।

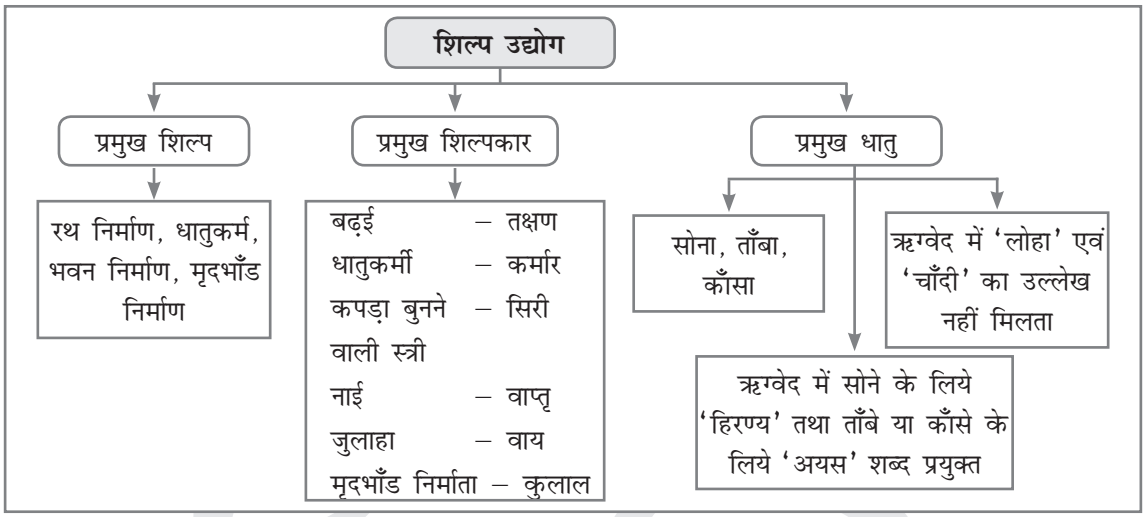

- गांधार प्रदेश की भेड़ें चिकनी ऊन के लिये प्रसिद्ध थीं। इस दौरान चर्म उद्योग प्रचलित होने के प्रमाण भी मिलते हैं। पशुओं में बैल आदि के चमड़े से कोड़े, लगाम, डोरी, थैले आदि बनाए जाते थे। इसके अलावा, एक वर्ग वैद्य, नर्तक-नर्तकी, नाई, गायक, वादक तथा सुरा बेचने वालों का भी था।

धार्मिक स्थिति (Religious Condition)

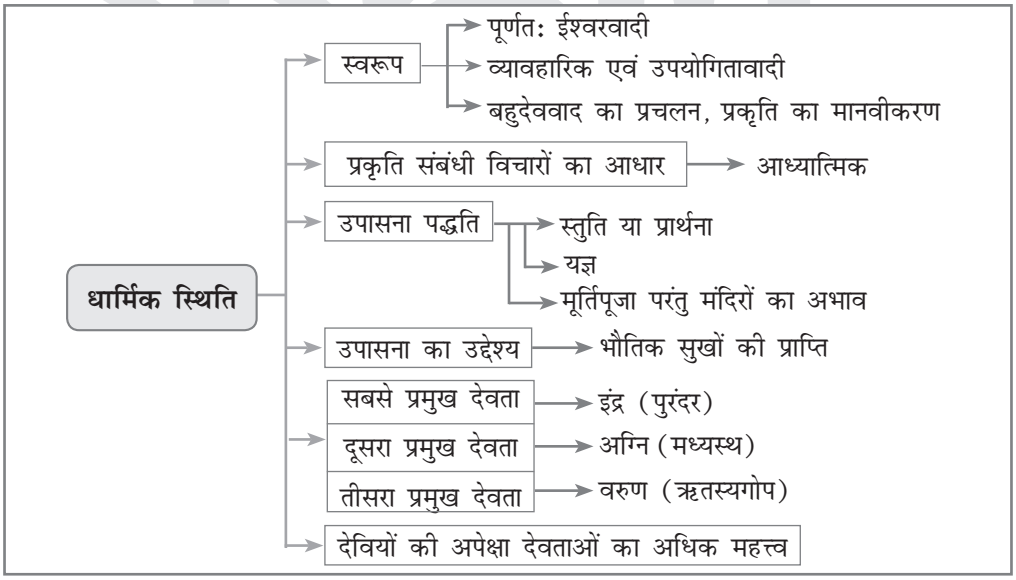

- ऋग्वैदिक आर्यों का 'धार्मिक जीवन' सामाजिक व आर्थिक जीवन की तुलना में काफी जटिल था। यहाँ आरंभ से ही 'बहुदेववाद' के दर्शन का प्रमाण मिलता हैं। ये लोग ईश्वरवादी थे। इन लोगों ने प्रकृति-संबंधी विचारों का प्रतिपादन आध्यात्मिक आधार पर किया, न कि वैज्ञानिक आधार पर।

इकाई

5

महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू.
(Mahajanapada Age – 6th Century BC)

महाजनपद काल

- प्रमुख स्रोत
- महाजनपदों का उदय
- बुद्ध के समकालीन गणतंत्र
  - ➤ गणराज्यों की शासन पद्धति
  - ➤ पतन के कारण
- मगध साम्राज्य का उदय
  - ➤ उदय के कारण
  - ➤ मगध साम्राज्य के प्रमुख वंश
- विदेशी आक्रमण
  - ➤ ईरानी (हखामनी) आक्रमण
  - ➤ यूनानी आक्रमण
- द्वितीय नगरीकरण
  - ➤ नगरीकरण के तत्त्व
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ उदय के कारण
  - ➤ प्रथम एवं द्वितीय नगरीकरण में अंतर

महाजनपद काल (Mahajanapada Age)

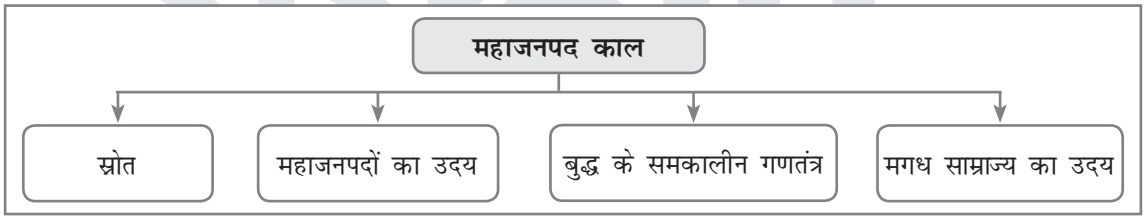

प्रमुख स्रोत (Major Source)

- छठी सदी ई.पू. का काल भारतीय इतिहास में महाजनपद काल के नाम से जाना जाता है। इस दौरान ऋग्वैदिककालीन 'जन' का विकास 'जनपद' से होते हुए महाजनपद का स्वरूप ग्रहण कर चुका था। महाजनपद के संदर्भ में हमें विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।
- देशी साहित्य के अंतर्गत बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण ग्रंथ, जैसे– अंगुत्तर निकाय, महावस्तु कल्पसूत्र, भगवतीसूत्र, वेदांग, उपनिषद, उपवेद इत्यादि महत्त्वपूर्ण है।
- विदेशी साहित्य के अंतर्गत हिकेटियस, हेरोडोटस, टेसियस, निर्याकस, जस्टिन, प्लूटार्क इत्यादि के विवरण महाजनपद कालीन इतिहास के संदर्भ में जानकारी प्रदान करतें हैं। इसके अतिरिक्त, पुरातात्विक स्रोतों यथा– उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा तथा विभिन्न स्थानों से प्राप्त उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभाँड (NBPW), आहत सिक्के एवं लौह उपकरण से तत्कालीन जन-जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

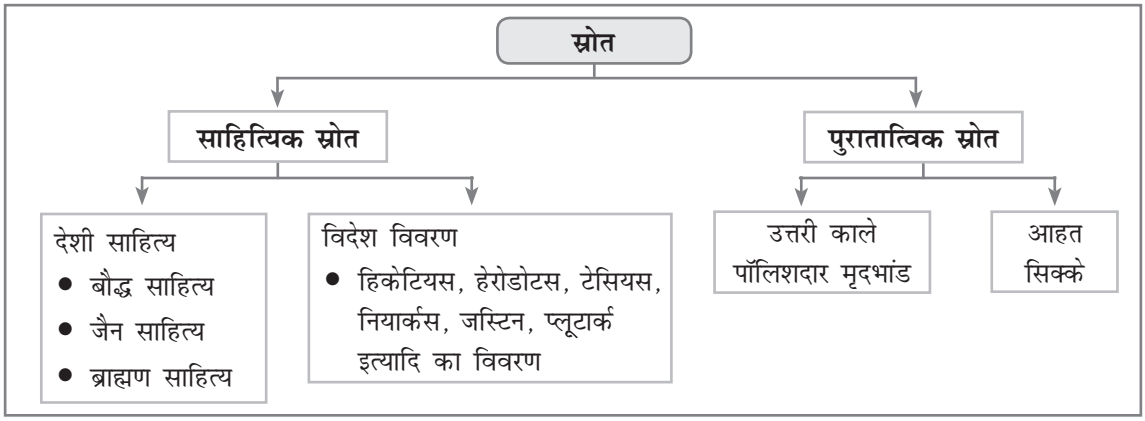

स्रोत

- **साहित्यिक स्रोत**
  - देशी साहित्य
    - बौद्ध साहित्य
    - जैन साहित्य
    - ब्राह्मण साहित्य
  - विदेश विवरण
    - हिकेटियस, हेरोडोटस, टेसियस, नियार्कस, जस्टिन, प्लूटार्क इत्यादि का विवरण
- **पुरातात्विक स्रोत**
  - उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड
  - आहत सिक्के

महाजनपदों का उदय (Rise of Mahajanpadas)

- आर्य संस्कृति के एकीकरण ने जनपदों के विस्तार के लिये अवसर प्रदान किया। कालांतर में कई जनपदों के मिलने से महाजनपदों का विकास हुआ। छठी सदी ई.पू. तक आते-आते राज्यों का विस्तार होने लगा। लोहे के बढ़ते उपयोग के कारण कला-कौशल के क्षेत्र में भी प्रगति हुई और शिल्पों का विविधीकरण होने लगा। इससे धन संग्रहण एवं व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई तथा राज्यों का विकास संभव हो पाया। ऐसा माना जाता है कि छठी सदी ई.पू. में पूर्वी भारत के क्षेत्रों में लोहे से निर्मित औज़ारों के प्रयोग से उत्पादन-अधिशेष की स्थिति उत्पन्न हुई। इस कारण व्यापार एवं वाणिज्य को बढ़ावा मिला। लौह उपकरणों के निर्माण से क्षत्रिय वर्ग की शक्ति में वृद्धि हुई। इन परिवर्तनों के कारण पहले से प्रचलित कबीलाई सामाजिक संरचना में भी बदलाव आया। इसके अलावा, आर्थिक समृद्धि बढ़ने के कारण नगरों का विकास होने लगा। फलस्वरूप उत्तर वैदिक काल में विद्यमान जनपद, महाजनपदों में रूपांतरित हो गए। महाजनपद काल को 'बुद्ध काल' के नाम से भी जाना जाता है।
- महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी, इसका विवरण बौद्ध ग्रंथों, 'अंगुत्तर निकाय', 'महावस्तु' तथा जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में मिलता है। इन महाजनपदों में मगध, कोसल, वत्स और अवंती सबसे शक्तिशाली महाजनपद हुआ करते थे। सोलह महाजनपदों में गोदावरी नदी के तट पर स्थित 'अश्मक' ही एकमात्र ऐसा महाजनपद था जो दक्षिण भारत में स्थित था। इन 16 महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी जबकि शेष महाजनपदों में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी। 'महापरिनिर्वाणसुत्त' से 6 महानगरों की जानकारी प्राप्त होती है– चंपा, राजगृह, श्रावस्ती, काशी, कौशांबी तथा साकेत। अंगुत्तर निकाय में वर्णित सोलह महाजनपदों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है–

सोलह महाजनपद (Sixteen Mahajanpadas)

क्र.सं.	महाजनपद	राजधानी
1.	**अंग**	चंपा (भागलपुर-मुंगेर का क्षेत्र, बिहार)
2.	**अश्मक**	पोतन या पोटिल (आंध्रप्रदेश; दक्षिण भारत में स्थित एकमात्र महाजनपद)
3.	**अवंती**	उत्तरी– उज्जयिनी; दक्षिणी– माहिष्मति

इकाई

6

प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन
(Religious Movement in Ancient India)

प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन
- पृष्ठभूमि
- नवीन धर्मों के उदय के कारण
- धार्मिक आंदोलन का स्वरूप
- प्रमुख भौतिकवादी चिंतक एवं उनसे संबंधित संप्रदाय
- विभिन्न धर्मों का उदय

बौद्ध धर्म
- गौतम बुद्ध
- बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ
- बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत
- बौद्ध संघ एवं उसकी कार्यप्रणाली
- बौद्ध संगीतियाँ
- बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- बौद्ध साहित्य
- बौद्ध धर्म का प्रसार
- बुद्ध का सामाजिक-राजनीतिक चिंतन
- बौद्ध धर्म का मूल्यांकन
- बौद्ध धर्म के पतन के कारण
- बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव

जैन धर्म
- परिचय
- जैन धर्म की शिक्षाएँ
- जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांत
- जैन संगीतियाँ
- प्रसिद्ध जैन मंदिर
- जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- जैन साहित्य
- जैन धर्म का समाज पर प्रभाव
- जैन धर्म का मूल्यांकन
- जैन धर्म के पतन के कारण
- बौद्ध एवं जैन धर्म में समानता तथा असमानता
- वैष्णव धर्म
- शैव धर्म
- शाक्त धर्म

प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन (Religious Movement in Ancient India)

पृष्ठभूमि (Background)

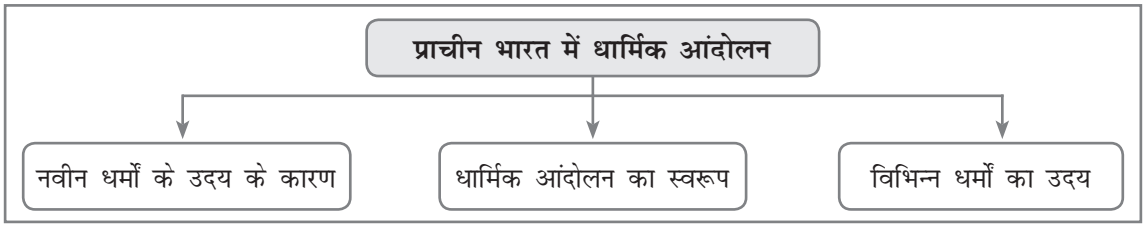

छठी सदी ई.पू. में जिस सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की आधारशिला रखी गई थी, उसकी पृष्ठभूमि उत्तरवैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। वस्तुत: उत्तरवैदिक काल में ही धर्म के अनेक कर्मकांडीय स्वरूपों ने तथा वर्ण व्यवस्था की जटिलता ने सामाजिक शोषण की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। जिसके कारण समाज में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गई। फलत: समाज के विभिन्न वर्गों में एक-दूसरे के प्रति घृणा और असंतोष की भावना प्रबल होती गई।

- बौद्ध संघ एवं मठों में अनैतिकता का समावेश हुआ।
- बौद्ध मठों में अत्यधिक धन का संचय हुआ और वे आक्रमणकारियों का शिकार हुए।
- बौद्ध भिक्षुओं का सामान्य लोगों से दूर होना।
- पालि भाषा छोड़कर संस्कृत को अपनाना।
- राजकीय संरक्षण का अंत हो जाना।
- शैव धर्म से इसकी टकराहट हुई। वस्तुत: शैव मत के पोषक बंगाल के शासक शशांक ने बौद्ध वृक्ष को कटवा दिया था। इस धार्मिक संघर्ष से बौद्ध धर्म क्षीण हो गया।

बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव (Impact and Sigficance of the Buddhism)

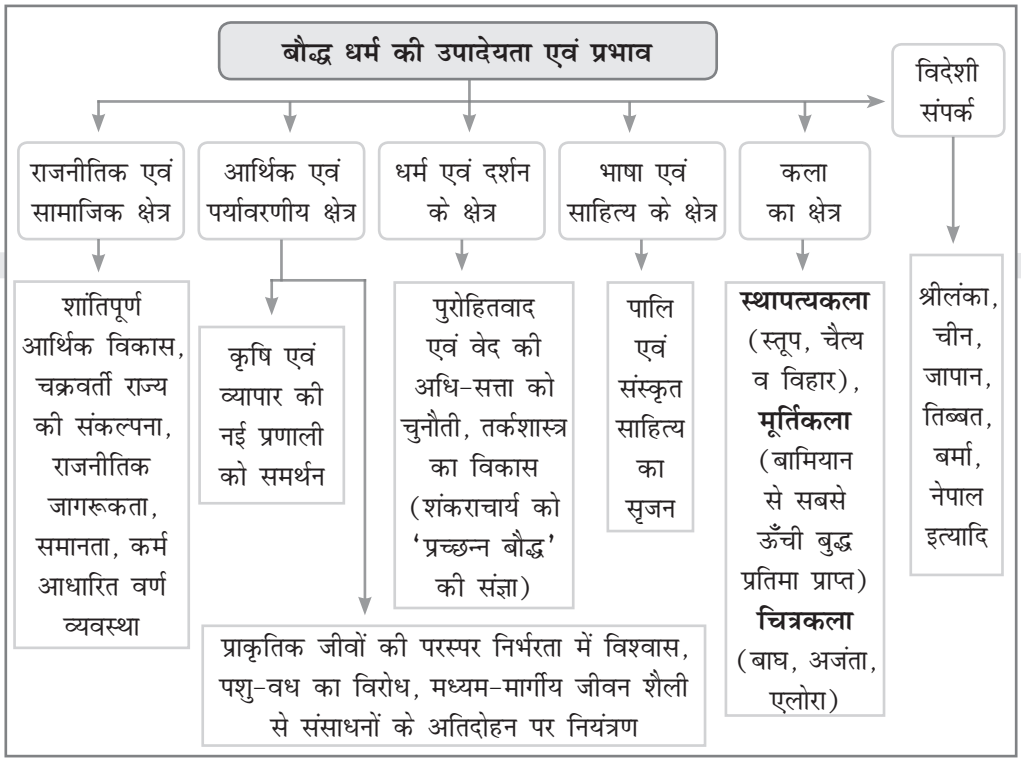

राजनीतिक क्षेत्र में

बौद्ध धर्म को स्वीकार करने वाले अनेक शासक हुए जिन्होंने अपने राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया और उसे राजकीय संरक्षण प्रदान किया। अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करके 'धम्म नीति' का पालन किया। बौद्ध धर्म आज भी भारत की विदेश नीति को निर्देशित करता है।

आर्थिक क्षेत्र में

छठी सदी ईसा पूर्व में लोहे का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होने लगा था। लौह निर्मित कृषि-यंत्रों से कृषि कार्य सुगम हो गया था। लोहे से बने हल के फाल से खेतों की जुताई आसान हो गई। इससे अनाज उत्पादन में वृद्धि संभव हो पाई

और अनाज अधिशेष की स्थिति उत्पन्न हुई। बौद्ध धर्म में लोग समुद्री व्यापार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे, अतः आर्थिक प्रगति में वृद्धि हुई।

सामाजिक क्षेत्र

महात्मा बुद्ध ने संघ का द्वार सभी वर्गों एवं जातियों के लिये खोल दिया था जिसके कारण अनेक लोगों ने यह धर्म ग्रहण किया और उसका प्रचार-प्रसार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी कारण आज बौद्ध धर्म विश्व के अनेक क्षेत्रों में फैला हुआ है।

सांस्कृतिक क्षेत्र

बौद्ध धर्म का प्रभाव अनेक प्राचीन भारतीय कलाओं पर भी परिलक्षित होता है। बौद्ध मतावलंबियों ने बौद्ध धर्म संबंधी मूर्तियों व स्तूपों का निर्माण कराया तथा विभिन्न गुफाओं में बौद्ध धर्म संबंधी चित्रों को उत्कीर्ण कराया। उदाहरणार्थ- साँची, भरहुत, सारनाथ, कौशांबी आदि स्थानों पर।

इसके अलावा, भारत के पश्चिमोत्तर में यूनान और भारत के बौद्ध अनुयायियों ने मिलकर मूर्तिकला की एक नवीन शैली 'गांधार शैली' विकसित की। इस शैली की बनी मूर्तियों में देशी एवं विदेशी प्रभाव परिलक्षित होता है।

प्रमुख शब्दावलियाँ	
शब्द	**अर्थ**
नत्ति या वृत्ति	संघ की सभा में प्रस्तुत प्रस्ताव
अनुसावन	प्रस्ताव का पाठ
भूमिस्किम	बहुमत से पारित प्रस्ताव
अधिकरण	प्रस्ताव पर होने वाले मतभेद
गुल्हक	संघ में गुप्त मतदान
विवतक	संघ में प्रत्यक्ष मतदान
आसन प्रज्ञापक	सभा के आसन (बैठने) की समुचित व्यवस्था करने वाला अधिकारी
उपोस्थ	भिक्षु-भिक्षुणियों का धर्म-संबंधी वार्ता के लिये इकट्ठा होना
उपसंपदा	संघ में शामिल होने की प्रक्रिया
प्रवज्या	गृहस्थ जीवन त्याग कर संघ में शामिल होने की प्रक्रिया
श्रमणेर	प्रवज्या को स्वीकार करने वाला व्यक्ति
उपासक	गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाला बौद्ध धर्मानुयायी
संघराय	भिक्षुओ का विश्राम स्थल
शील	नैतिकता
शलाका	मतपत्र

इकाई

7

मौर्य काल
(Mauryan Period)

- परिचय
- जानकारी के स्रोत
- राजनीतिक स्थिति
  - चंद्रगुप्त मौर्य
  - बिंदुसार
  - अशोक
  - अशोक के उत्तराधिकारी
- प्रशासनिक स्थिति
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - नगरीय प्रशासन
  - ग्राम प्रशासन
  - न्यायिक प्रशासन
  - गुप्तचर प्रशासन
  - राजस्व प्रशासन
  - सैन्य प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- कला एवं संस्कृति
  - स्थापत्य कला
  - मूर्तिकला
  - शिक्षा, भाषा एवं साहित्य

परिचय (Introduction)

- मौर्य साम्राज्य भारत के महानतम साम्राज्यों में से एक था। इस साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध के नंदों का ही नहीं, अपितु उत्तर-पश्चिमी सीमांत में यूनानी क्षत्रपों की सत्ता का भी विनाश किया।
- मौर्य साम्राज्य की स्थापना के बाद भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई। यह इतिहास में पहला अवसर था, जब पूरा भारत राजनीतिक तौर पर एकजुट हुआ था।
- हर्यंक वंश के बिम्बिसार और अजातशत्रु द्वारा रखी गई नींव पर नंद राजवंश ने वृहद् मगध साम्राज्य की स्थापना की। नंद वश के सम्राटों ने मगध में विशाल सेना को संगठित किया तथा एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली की भी स्थापना की।
- इसी दौरान 326 ईसा पूर्व में यूनानी शासक सिकंदर का आक्रमण पश्चिमोत्तर भारत में हुआ। व्यास नदी के पश्चिमी तट पर पहुँचकर सिकंदर की सेना ने आगे बढ़ने से मना कर दिया। फलतः तत्कालीन नंद शासक धननंद का सामना यूनानी सेना से नहीं हो सका।
- इतिहासकारों के अनुसार, यदि सिकंदर का सामना धननंद से हुआ होता तो यह कहना कठिन होता कि देश की रक्षा का दायित्व धननंद निभाने में समर्थ होता या नहीं। हालाँकि मगध के शासक के पास विशाल सेना अवश्य थी किंतु जनता का सहयोग उसे प्राप्त नहीं था।
- कर के अत्यधिक बोझ तथा धननंद के अत्याचारों एवं कुप्रशासन के कारण मगध की प्रजा पीड़ित हो चुकी थी। शासन के अंतिम दिनों में धननंद की सत्ता कमज़ोर तथा जनता के मध्य राजा के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा था जिसका लाभ उठाते हुए चंद्रगुप्त ने कौटिल्य (चाणक्य) की सहायता से नंद राजवंश की सत्ता का उन्मूलन किया तथा मौर्य वंश की स्थापना की।

- अर्थशास्त्र में 18 तीर्थों का उल्लेख किया गया है, जो इस प्रकार हैं–

तीर्थ	संबंधित विभाग एवं कार्य
मंत्री एवं पुरोहित	मंत्री- मुख्य सलाहकार एवं पुरोहित- प्रमुख धर्माधिकारी
समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रमुख (वित्त मंत्री)
सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष
सेनापति	युद्ध विभाग का मंत्री
युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश
व्यावहारिक	दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश
नायक	सेना का संचालक (नेतृत्वकर्त्ता)
कर्मांतिक	उद्योग-धंधों का प्रधान निरीक्षक
मंत्रिपरिषदाध्यक्ष	मंत्रिपरिषद् का अध्यक्ष
दंडपाल	पुलिस अधिकारी
दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष
अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
नागरक (पौर)	नगर का प्रमुख अधिकारी
प्रशास्ता	राजकीय आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी
दौवारिक	राजमहलों की देखरेख करने वाला प्रमुख अधिकारी
आंतवैशिक	अंत:पुर का अध्यक्ष (राजा की अंगरक्षक सेना का प्रधान अधिकारी)
आटविक	वन विभाग का प्रधान

- उपर्युक्त पदाधिकारियों के अतिरिक्त अर्थशास्त्र में 26 अध्यक्षों का उल्लेख मिलता है, ये मंत्रियों के अधीन काम करते थे। मेगस्थनीज ने संभवत: इन्हें ही 'मजिस्ट्रेट' कहा है।
- मौर्यों के केंद्रीय प्रशासन में अध्यक्षों को 1000 पण वार्षिक वेतन मिलता था तथा ये प्रशासन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।
- ध्यातव्य है कि विभागीय अध्यक्ष भी अमात्यों में से ही नियुक्त किये जाते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रथम श्रेणी के अमात्य, मंत्री के सदस्य; द्वितीय श्रेणी के अमात्य, मंत्रिपरिषद् के सदस्य तथा तृतीय श्रेणी के अमात्य, विभागीय अध्यक्ष होते थे।
- इन अध्यक्षों का विवरण इस प्रकार है–

अध्यक्ष	संबंधित विभाग	अध्यक्ष	संबंधित विभाग
पण्याध्यक्ष	वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष	**गो-अध्यक्ष**	पशुधन विभाग का अध्यक्ष
सुराध्यक्ष	आबकारी विभाग का अध्यक्ष	**विवीताध्यक्ष**	चारागाहों का अध्यक्ष

- यष्टि (Shaft) खंभे का बेलनाकार हिस्सा है जो कि सपाट और अत्यधिक चिकना है। इसकी अनुप्रस्थ काट गोलाकार है तथा यह ऊपर की ओर थोड़ा पतला (Tapered) होता है। यह एकाश्म प्रस्तर से निर्मित होता है।
- यष्टि के ऊपर घंटे अथवा आवांगमुखी कमल (Inverted Lotus) जैसी संरचना, लाट (Capital) कहलाती है।
- लाट के ऊपर रखा वृत्ताकार अथवा आयताकार आधार चौकी (Abacus) कहलाता है जिसके ऊपर अलंकृत रूपांकन एवं पशु आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
- स्तंभ के शीर्ष पर किसी पशु की मूर्ति को स्थान दिया गया है, जैसे– सारनाथ स्तंभ में सिंह तथा रामपुरवा स्तंभ में बैल की आकृति।

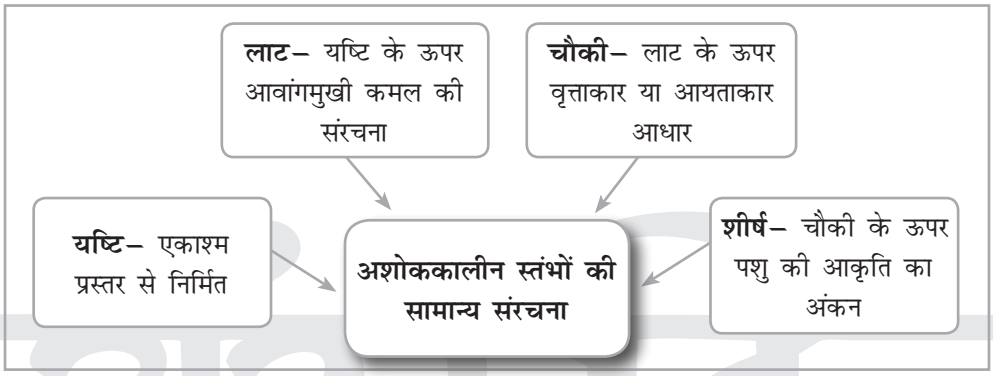

राष्ट्रीय प्रतीक

- भारत का राजचिह्न अशोक के सारनाथ स्तंभ के शीर्ष पर स्थित सिंह की प्रतिकृति है। इस स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह एक-दूसरे की ओर पीठ किये हुए बैठे हैं, परंतु सामने से केवल तीन सिंह ही दिखाई देते हैं।
- इसके नीचे स्थित चौकी पर उभरी हुई नक्काशी है जिसमें 32 तीलियों का एक चक्र है जो बुद्ध द्वारा धर्मचक्रप्रवर्तन का प्रतीक है। साथ ही, इस चौकी पर चार पशु दर्शाए गए हैं– एक दौड़ता हुआ घोड़ा, एक बैल, एक हाथी और एक सिंह। फलक के नीचे मुंडकोपनिषद् का सूत्र 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है।

सत्यमेव जयते

अशोककालीन स्तंभों एवं अक्खमनी स्तंभों का तुलनात्मक अध्ययन
(Comparative Study of Ashokan Pillars and Achaemenid Pillars)

- इतिहासकारों ने अशोककालीन स्तंभों को कई आधारों पर अक्खमनी ईरान के स्तंभों के समान बताया है। पाश्चात्य विद्वानों ने अशोक के स्तंभों को चमकीली पॉलिश, घंटाकृति और शीर्ष भाग में पशु की आकृति के आधार पर ईरानी स्तंभों की प्रतिकृति कहा है।
- वहीं दूसरी तरफ, भारतीय इतिहासकारों के अनुसार, अशोक के स्तंभ की कला का स्रोत भारतीय बताया गया है। मौर्य स्तंभों पर उत्कीर्ण पशु की आकृतियाँ सैंधव सभ्यता की परंपरा का ही विस्तार हैं। रामपुरवा के स्तंभ पर उत्कीर्ण बैल मोहनजोदड़ो की मुहर पर उकेरे गए बैल के समान है।

- मौर्यकालीन स्तंभों पर चमकीली पॉलिश के संदर्भ में इतिहासकारों ने स्पष्ट किया कि यह कला भारत में पहले से विद्यमान थी। मौर्यकाल से पूर्व प्राप्त हुए काली पॉलिश वाले मृद्भाँड से यह सिद्ध होता है कि भारतीय कलाकारों को इस ओपदार चमक के विषय में पहले से ही रुचि थी।
- इस प्रकार, भारतीय स्तंभों को ईरानी स्तंभों की नकल मात्र नहीं माना जा सकता, क्योंकि भारत के कलाकारों ने विदेशी स्तंभ कला की विशेषताओं का अध्ययन करके एक पूर्ण भिन्न कलाकृति का विकास किया। यही कारण है कि ईरानी और मौर्यकालीन स्तंभों के कुछ विशिष्ट गुण इनमें समानता प्रदर्शित करते हैं, परंतु व्यापक रूप से देखने पर इन दोनों कलाओं में व्यापक विभिन्नता दिखाई देती है, जो इस प्रकार है–

अंतर का आधार	अशोक के स्तंभ	अक्खमनी साम्राज्य (ईरानी/फारसी) के स्तंभ
एकाश्म पत्थर	अशोककालीन स्तंभों का निर्माण एकाश्म पत्थरों से किया गया।	अक्खमनी स्तंभों का निर्माण अलग-अलग पाषाण खंडों से किया गया।
आकृति	भारतीय स्तंभों की आकृति सपाट है।	अक्खमनी स्तंभों की आकृति नालीदार है।
लाट	स्तंभ की लाट को आवांगमुखी कमल या पूर्णघट कहा गया।	स्तंभ के शीर्ष भाग को घंटा कहा गया।
स्थान	अशोक के स्तंभों को स्वतंत्र स्थानों पर रखा गया था।	ईरानी स्तंभों को राजभवनों में ही लगाया गया था।
स्तंभों की चौड़ाई	अशोक के स्तंभ नीचे से ऊपर की तरफ पतले होते गए हैं।	इन स्तंभों की चौड़ाई नीचे से ऊपर तक एक समान है।
आधार	मौर्य स्तंभ किसी आधार पर खड़े नहीं हैं।	ईरानी स्तंभ आयताकार या वृत्ताकार आधार पर खड़े हैं।
शीर्ष	अशोककालीन स्तंभों के शीर्ष पर पशुओं की आकृतियाँ हैं।	ईरानी स्तंभों पर मानव आकृतियाँ है।
प्रतीक	अशोक के स्तंभों के शीर्ष पर निर्मित पशु आकृति का प्रतीकात्मक अर्थ है।	ईरानी स्तंभों के शीर्ष पर प्रतीकात्मकता का अभाव है।

स्तूप निर्माण कला (Stupa Architechture)

- स्तूप एक बौद्ध स्मारक है जिसका निर्माण बुद्ध या अन्य बौद्ध संतों से जुड़े पवित्र अवशेषों के ऊपर किया गया है। यह मूलतः एक समाधिनुमा भवन है जिसका निर्माण प्रेरणा और पूजा के उद्देश्य से किया गया है। यद्यपि वैदिक ग्रंथों में स्तूप का उल्लेख मिलता है, परंतु वर्तमान समय में इसे बौद्ध धर्म से ही संबंधित माना जाता है।
- मौर्यकाल से पूर्व बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित किये गए 8 स्तूपों में से वर्तमान में पिपरहवा स्तूप के ही अवशेष प्राप्त हुए हैं। स्तूप निर्माण का वास्तविक कार्य मौर्य सम्राट अशोक

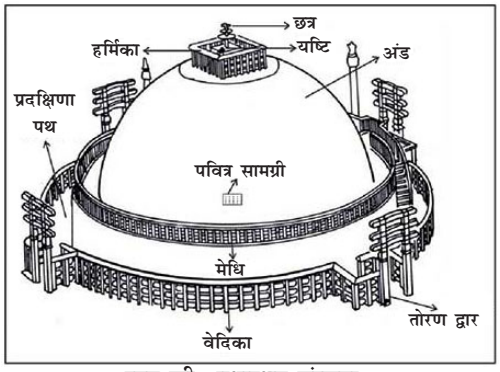

स्तूप की आधारभूत संरचना

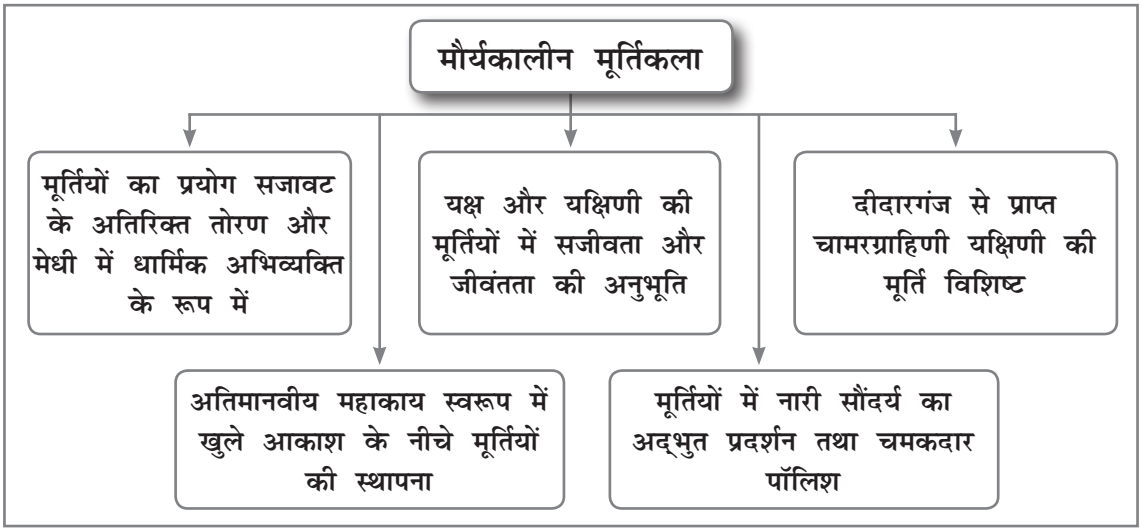

मौर्यकालीन मूर्तिकला

- मूर्तियों का प्रयोग सजावट के अतिरिक्त तोरण और मेधी में धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में
- यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियों में सजीवता और जीवंतता की अनुभूति
- दीदारगंज से प्राप्त चामरग्राहिणी यक्षिणी की मूर्ति विशिष्ट
- अतिमानवीय महाकाय स्वरूप में खुले आकाश के नीचे मूर्तियों की स्थापना
- मूर्तियों में नारी सौंदर्य का अद्‌भुत प्रदर्शन तथा चमकदार पॉलिश

शिक्षा, भाषा और साहित्य (Education, Language and Literature)

- मौर्यकाल में शिक्षा, भाषा और साहित्य के क्षेत्र में व्यापक उन्नति हुई। मौर्यकालीन शासकों के संरक्षण में शिक्षा की उन्नति को अनुकूल अवसर मिला। तक्षशिला उच्च शिक्षा का सुविख्यात केंद्र बना। यहाँ विभिन्न देशों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिये आते थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य तक्षशिला में आचार्य चाणक्य का शिष्य बनकर रह चुका था। इसी प्रकार अनेक राजकुमार तक्षशिला में अध्ययन किया करते थे।
- मौर्यकाल में तक्षशिला जैसे उच्च शिक्षा केंद्रों के अतिरिक्त गुरुकुलों, मठों तथा विहारों में शिक्षा दी जाती थी। राजगृह, वैशाली, श्रावस्ती, कपिलवस्तु आदि नगर शिक्षा के सुविख्यात केंद्र थे। इन शिक्षा केंद्रों को राज्य की ओर से आर्थिक सहायता मिलती थी।
- मौर्यकाल में तीन भाषाओं का प्रचलन था– संस्कृत, प्राकृत और पालि। पालि एक प्रमुख जन भाषा थी। अशोक ने पालि को संपूर्ण साम्राज्य की राजभाषा बनाया और इसी भाषा में अपने अभिलेख उत्कीर्ण कराए।
- मौर्यकाल में संस्कृत शिक्षित समुदाय द्वारा प्रयोग की जाने वाली एक प्रमुख भाषा थी जिसमें अनेकों साहित्यों की रचना भी की गई। इसके अलावा, प्राकृत भाषा को मुख्यतया जैन साहित्यों के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया गया।
- अशोक के अभिलेखों में दो प्रकार की लिपियों ब्राह्मी और खरोष्ठी का प्रयोग किया गया है। ईरानियों के प्रभाव से भारत में आई खरोष्ठी लिपि का प्रयोग देश के पश्चिमोत्तर भाग में किया गया था। यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। साम्राज्य के शेष भाग में ब्राह्मी लिपि का प्रचलन था।
- मौर्यकालीन साहित्यिक कृतियों के बारे में अधिक जानकारी का अभाव है। इस काल की सर्वाधिक प्रमुख रचना कौटिल्य का अर्थशास्त्र है, जो मौर्यकालीन जानकारियों का एक प्रमुख स्रोत भी है। इसके अलावा, मोग्गलिपुत्ततिस्स द्वारा अभिधम्मपिटक पर आधारित 'कथावस्तु' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ तथा भद्रबाहु द्वारा 'कल्पसूत्र' की रचना भी इसी दौरान की गई।

❑❑❑